समाचार पत्र

द रुरल कनेक्ट

खंड 7 अंक 6 जून 2021 www.mgncre.org

महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण शिक्षा परिषद
Mahatma Gandhi National Council of Rural Education
उच्चतर शिक्षा विभाग, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

कोविड -19 की वर्तमान स्थिति दुर्भाग्यपूर्ण है, लेकिन सरकार छात्रों की सुरक्षा और शैक्षणिक कल्याण सुनिश्चित करने के लिए नए प्रयोग करके स्थिति को अवसर में बदलने के लिए प्रतिबद्ध है... ...केंद्रीय शिक्षा मंत्री श्री रमेश पोखरियाल 'निशंक' ने सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के स्कूल शिक्षा सचिवों के साथ बैठक की अध्यक्षता

करते हुए कहा। मंत्री ने पिछले वर्ष राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों द्वारा किए गए सुसंगत प्रयासों को जारी रखने की आवश्यकता पर जोर दिया और इस महामारी की अवधि में सबसे कमजोर और हाशिए के बच्चों तक पहुंचने के महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने आगे कहा कि विभाग ने महामारी के दौरान निरंतर सीखने की सुविधा के लिए 2020-21 में कई पहलें की हैं। इनमें शामिल हैं: पी.एम. ई-विद्या के तहत दीक्षा का विस्तार; स्वयं प्रभा टी.वी. चैनलों के गुलदस्ते के तहत डी.टी.एच. टी.वी. चैनल; दीक्षा में शिक्षकों के लिए ऑनलाइन निष्ठा प्रशिक्षण का शुभारंभ; छात्रों की सामाजिक-भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक जरूरतों आदि को पूरा करने के लिए मनोदर्पण का शुभारंभ। साथ ही, डिजिटल शिक्षा तक पहुंच के बिना बच्चों तक पहुंचने के लिए कई पहल की गई हैं। उन्होंने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए विभिन्न हितधारकों को शामिल करने के महत्व को भी रेखांकित किया। आई.आई.एस.सी. / आई.आई.टी. / आईआई.आई.टी. / आई.आई.एस.ई.आर. और एन.आई.टी. के निदेशकों के साथ एक ऑनलाइन बैठक में, केंद्रीय मंत्री ने कहा कि कोविड-19 की स्थिति के प्रबंधन के लिए पर्याप्त सुरक्षा उपाय करने के अलावा इन राष्ट्रीय महत्व के संस्थानों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा बनाए रखने की आवश्यकता है। उन्होंने इन संस्थानों के छात्रों द्वारा किए जा रहे कई तकनीकी हस्तक्षेपों की सराहना की -

- *देश में ऑक्सीजन संसाधनों की कमी से निपटने के लिए, आई.आई.टी. कानपुर में स्टार्टअप इनक्यूबेशन एवं इनोवेशन सेंटर का उद्देश्य उच्च गुणवत्ता वाली स्वदेशी, तेजी से मापनीय ऑक्सीजन जनरेटर इकाइयों का निर्माण करना है।*
- *आई.आई.टी.-हैदराबाद ने एक अल्ट्रा वायलेट कीटाणुशोधन ट्यूब विकसित की है जो मुख्य प्रवेश द्वार पर रखे जाने पर चीजों को कीटाणुरहित कर देती है और संस्थान में वायरस ले जाने की संभावना को प्रतिबंधित करती है।*
- *आई.आई.टी. कानपुर में जैविक विज्ञान और बायोइंजीनियरिंग विभाग SARS-CoV-2 कोरोनावायरस के खिलाफ प्रतिकृति-सक्षम टीके विकसित करने पर काम कर रहे हैं।*
- *भारतीय प्रबंधन संस्थान, लखनऊ में प्रोफेसरों की एक टीम वर्तमान में ऑक्सीजन ऑडिट के लिए अपनाई जाने वाली प्रक्रिया पर काम कर रही है, जिसके तहत वे अस्पतालों में ऑक्सीजन के इष्टतम उपयोग को सुनिश्चित करने के लिए ऑक्सीजन के उपयोग को ट्रैक और मॉनिटर करेंगे।*
- *आई.आई.टी. मुंबई देश में मौजूदा ऑक्सीजन संकट से निपटने के लिए टी.सी.ई. कनेक्ट और स्पैनटेक इंजीनियर्स के साथ गठजोड़ किया है। शोधकर्ताओं ने नाइट्रोजन संयंत्र को ऑक्सीजन जनरेटर में बदलने का एक अभिनव तरीका खोजा है।*
- *आई.आई.टी. मुंबई एक ऐसी सतह तैयार की है जिस पर अवशिष्ट बूंदों को ले जाने वाला कोविड वायरस कांच या प्लास्टिक की तुलना में तेजी से वाष्पित हो जाएगा।*
- *आई.आई.आई.टी. हैदराबाद ने एम.एल. का उपयोग करने वाले कोविड रोगियों के लिए मृत्यु भविष्यवाणी मॉडल विकसित किया है। यह मॉडल कोविड रोगियों में स्वास्थ्य और मृत्यु दर के पूर्वानुमान के आधार पर स्वास्थ्य सेवा को प्राथमिकता देने में मदद करेगा।*

गतिविधियों की समीक्षा - मई 2021

- 5 मेस हस्ताक्षरित - बी.बी.ए. ग्रामीण प्रबंधन
- 7 संकाय विकास कार्यक्रम
- मनोवैज्ञानिक परामर्श और कॉविड 19 स्वयंसेवी कौशल / 22102 प्रतिभागियों के लिए मार्गदर्शन पर 482 संस्थागत कार्यशालाएं - 16 राज्य / 482 कोविड स्वयंसेवी टीमों का गठन
- 27 साइकोसामाजिक परामर्श और कोविड के लिए मार्गदर्शन पर क्लस्टर कार्यशालाएं 19 स्वयंसेवी कौशल / 3802 प्रतिभागी / />35 कॉविड स्वयंसेवी टीमों का गठन
- **प्रभाव** - संस्थानों में मनोवैज्ञानिक समर्थन कोशिकाओं का गठन किया जा रहा है
- स्वच्छता कार्य योजना पर 138 संस्थागत कार्यशालाएं (व्यावसायिक शिक्षा के लिए-नाई तालिम-अनुभवी शिक्षा (वेंटल) शिक्षा और प्रशिक्षण के लिए जिला संस्थान (आहार) - 7638 प्रतिभागियों (प्रधान अध्यापक. संकाय सदस्यों और छात्रों)

एम.जी.एन.सी.आर.ई. ने पर्यावरण के अथक योद्धा श्री सुंदरलाल बहुगुणा को श्रद्धांजलि अर्पित की है

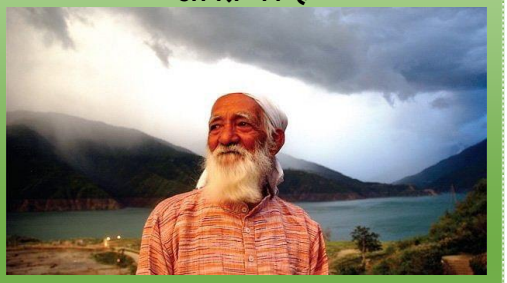

भारत ने अपने सर्वश्रेष्ठ ज्ञात पर्यावरणीय कार्यकर्ताओं में से एक, श्री सुंदरलाल बहुगुणा को कोविड -19 में खो दिया। उन्होंने चिपको आंदोलन का नेतृत्व किया, जो पेड़ों की रक्षा के उद्देश्य से एक अहिंसक आंदोलन जिसने वनों को संरक्षित करने के लिए महिलाओं की सामूहिक लामबंदी को जन्म दिया। उन्होंने हिमालय के पार एक मार्च का नेतृत्व किया, जिससे हिमालय के जंगलों के कुछ क्षेत्रों को पेड़- की कटाई से बचाने के लिए कानून बनाया गया।
एम.जी.एन.सी.आर.ई. महान आत्मा को सलाम करता है!

संपादक की टिप्पणी

मैं केंद्रीय शिक्षा मंत्री श्री रमेश पोखरियालजी को उनके लेखन, सामाजिक और शानदार सार्वजनिक जीवन के माध्यम से मानवता के लिए उनकी असाधारण प्रतिबद्धता और उत्कृष्ट सेवा के लिए इस वर्ष के अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार - "अंतर्राष्ट्रीय अजेय स्वर्ण पदक" से सम्मानित करने के लिए बधाई देता हूं। श्री रमेश पोखरियालजी को विश्व शांति कार्यक्रम के लिए उनके निरंतर समर्थन और प्रतिबद्धता और सबसे वैज्ञानिक तरीके से प्राचीन वैदिक मूल्यों, ज्ञान और पारंपरिक ज्ञान का प्रचार करने के लिए सराहना की गई है।

मैं श्री सुंदरलाल बहुगुणा को गहरी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं जो भारतीय पर्यावरणवाद के गांधीवादी अग्रदूत थे। वे वनों की कटाई के खिलाफ प्रसिद्ध चिपको आंदोलन के पीछे प्रेरक शक्ति थे, जिसने भारतीय पर्यावरणवाद में एक महत्वपूर्ण घटना चिह्नित किया। दुख की बात है कि उन्होंने कोविड के कारण दम तोड़ दिया - एक और महान व्यक्तित्व घातक कोरोना वायरस से हार गया।

अपने एजेंडे को जारी रखते हुए, हमने बी.बी.ए. ग्रामीण प्रबंधन पाठ्यक्रम में विशेषज्ञता साझा करने के लिए संस्थानों के साथ 5 समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए हैं। हमने संस्थागत और क्लस्टर कार्यशालाओं का आयोजन किया है और इसका परिणाम 500 से अधिक संस्थानों में कोविड स्वयंसेवी टीमों का गठन हुआ है।

कोविड - 19 महामारी ने हममें से प्रत्येक को अलग-अलग तरीकों से प्रभावित किया है। जबकि कुछ व्यक्तिगत और व्यावसायिक नुकसान से उबर रहे हैं, कुछ वायरस के प्रभाव के बाद उत्पन्न बड़ी चुनौतियों से निपट रहे हैं। किसी ने अपनों को खो दिया है, कोई शारीरिक रूप से कमजोर हो गया है, किसी को भारी आर्थिक नुकसान हुआ है, कोई जीवित रहने की मांग के आगे असामाजिक हो गया है, कोई मानसिक रूप से बीमार हो गया है, तो कोई मौत के मुंह में समा गया है। हम अभूतपूर्व समय में जी रहे हैं। हम सभी इस कोविड - 19 समय के दौरान तीव्र भावनाओं और चिंता के भारी स्तर से निपट रहे हैं। ये भावनाएँ वास्तव में हमारी मदद कर सकती हैं यदि हम जानते हैं कि उन्हें कैसे संभालना है।

सामुदायिक जुड़ाव के माध्यम से उच्च शैक्षणिक संस्थानों के साथ जुड़ने के एम.जी.एन.सी.आर.ई. के जनादेश को ध्यान में रखते हुए, परिषद ने स्वच्छता पहलुओं के साथ-साथ मनोवैज्ञानिक परामर्श के पहलुओं के साथ कार्यशालाएं और संकाय विकास कार्यक्रम आयोजित करना शुरू कर दिया है। प्रयास देश के भावनात्मक स्वास्थ्य में लचीलापन लाने का है। हमने अनुभवात्मक शिक्षा और सामाजिक और सामुदायिक जुड़ाव प्रदान करने में 5 करोड़ से अधिक छात्रों और शिक्षकों के जीवन को छुआ है। अब हम अपने देश के भावनात्मक लचीलेपन का निर्माण करने और अपने देश को स्वास्थ्य और खुशी के ट्रैक पर वापस लाने की उम्मीद करते हैं। हम एन.एस.एस. अधिकारियों और शिक्षकों के साथ भावनात्मक बुद्धिमत्ता और लचीलापन (अनुभवात्मक शिक्षण और सीखने की केस विधि) और मनोवैज्ञानिक परामर्श और कोविड स्वयंसेवी कौशल के लिए मार्गदर्शन पर संकाय विकास कार्यक्रम और कार्यशालाएं आयोजित कर रहे हैं। जब कोई व्यक्ति बीमार होता है तो पूरा परिवार तनाव और दबाव से गुजरता है। संकट एक खतरनाक घटना बन जाती है, जो परिवार के लिए कुछ खतरा पैदा करती है। परिवार के सदस्यों को व्यक्तिगत आघात, अव्यवस्था, वसूली, और समायोजन के रोलर-कोस्टर पैटर्न का अनुभव होता है। परिवार को तनाव का सामना करना पड़ता है और संकट से निपटने के विभिन्न तरीकों को आजमाना पड़ता है।

"सफलता का पैमाना यह है कि हमारे अनुरोध और आवश्यकता के अनुसार कितने लोग और उनमें से प्रत्येक कितना काम कर रहा है। यही परिणाम है। हमने जो किया वह इस बात से आंका जाता है कि क्या हुआ।"

डॉ. डब्ल्यू. जी. प्रसन्न कुमार
अध्यक्ष, एम.जी.एन.सी.आर.ई.

एम.जी.एन.सी.आर.ई. का प्रयास छात्रों को स्वयंसेवक बनने के लिए प्रशिक्षित करना और कोविड रोगियों और परिवार के सदस्यों की सहायता करना है। समर्थन भावनात्मक या सेवा उन्मुख हो सकता है।
आसानी से समझने के लिए कार्यशालाएं स्थानीय भाषा में आयोजित की जा रही हैं। सहानुभूति के माध्यम से स्वयंसेवी सहायता कौशल प्रदान किया जा रहा है। कार्यशालाओं का लक्ष्य कार्यशालाओं में भाग लेने वाले प्रत्येक संस्थान में छात्रों की 5 टीमों द्वारा सेवा गतिविधि की शुरुआत करना है - अस्पताल प्रबंधन टीम; गैर-अस्पताल प्रबंधन टीम; परिवार सहायता टीम; चिकित्सा आपूर्ति टीम; और मनोवैज्ञानिक सहायता टीम।

मुझे खुशी है कि संस्थान हमारे कार्यक्रमों के प्रभाव के रूप में मनोवैज्ञानिक सहायता प्रकोष्ठों की स्थापना के लिए आगे आ रहे हैं। उदाहरण के लिए, टी.एन.टी.ई.यू. ने मनोवैज्ञानिक सहायता सेवा प्रकोष्ठ (पी.एस.एस.) का गठन किया है और तमिलनाडु के उच्च शिक्षण संस्थानों के शिक्षा विभागों में पी.एस.एस. प्रकोष्ठों के गठन का संदेश भेजा है। यह अत्यधिक उत्साहजनक है और हमें इन पंक्तियों पर आगे काम करने और इस महामारी के समय में यथासंभव अधिक से अधिक सेवा करने के लिए प्रेरित करता है।

डॉ. भरत पाठक
उपाध्यक्ष, एम.जी.एन.सी.आर.ई.

कोविड **19** के आपदा प्रबंधन की अपनी जिम्मेदारी के हिस्से के रूप में एम.जी.एन.सी.आर.ई. ने महामारी से निपटने में भारत के राज्यों की सराहना करते हुए प्रभावी परिणामों के लिए कुछ दिशानिर्देश और दृष्टिकोण रणनीतियां दी हैं।

इस दूसरी वेव से उत्पन्न स्थिति को संभालने के लिए नागरिकों और समुदायों के विश्वास और स्वामित्व को बढ़ाने की आवश्यकता है, जिसने हमें अनजाने में पकड़ लिया। निम्नलिखित रणनीति साझा की जाती है क्योंकि यह इस प्रक्रिया को मजबूत कर सकती है।

राज्य सरकार स्तर

प्रबंधन सूचना प्रणाली: रोग, दवाओं, अस्पतालों, सुविधाओं की उपलब्धता और वायरस से निपटने के लिए चिकित्सा बुनियादी ढांचे के साथ-साथ विभिन्न स्तरों पर टीकाकरण पर अपने प्रमाणित प्रभावी एम.आई.एस. को साझा करना मूल रूप से कोविड प्रोटोकॉल का पालन करने में व्यवहार परिवर्तन पर ध्यान केंद्रित करना। सभी को इलाज और वैक्सीन मिलने का आश्वासन। इसमें उत्पादन, आवश्यकता, स्टॉक, आवंटन और परिवहन शामिल होना चाहिए।

क्षेत्रीय स्वास्थ्य सचिव: सरकार के क्षेत्रीय स्वास्थ्य सचिवों की आवश्यकता है

सशक्त कोर कमेटी: मुख्य सचिव और डी.एम. त्वरित और प्रभावी निर्णय लेने और टीकाकरण और उपचार पर कार्रवाई पर निर्देश और धन के साथ बैठक करते हैं। वित्तीय आवंटन के साथ तकनीकी जानकारी आधारित निर्णय लेने वाले जिलों का सशक्तिकरण।

तकनीकी सलाह: सरकारी क्षेत्र के बाहर के विशेषज्ञों की समितियां प्रमुख सार्वजनिक स्वास्थ्य विशेषज्ञों, व्यवहार वैज्ञानिकों और सेवानिवृत्त लेकिन बहुत सक्रिय और संबंधित प्रशासकों सहित राज्य, जिला और स्थानीय स्तर पर बनाई जानी चाहिए। इसे राज्य सरकारों द्वारा अनिवार्य किया जाना चाहिए और कार्यान्वयन एजेंसियों को उचित प्रतिक्रिया प्रदान करने और कार्यान्वयन की प्रगति की निगरानी करने का काम सौंपा जाना चाहिए।

अस्पताल के कर्मचारियों का सुदृढ़ीकरण: स्वास्थ्य क्षेत्र के स्वास्थ्य देखभाल कर्मचारियों की तत्काल व्यस्तता और कौशल और स्वास्थ्य क्षेत्र में रुचि रखने वालों को इसे प्रमाणन और रोजगार से जोड़ना।

जिला स्तरीय

दैनिक मीडिया ब्रीफिंग के साथ अनुमतियों और विनियमों पर निर्णय लेने के लिए सशक्तिकरण के साथ सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों में दवा की आवाजाही, वैक्सीन आंदोलन और स्वास्थ्य बुनियादी ढांचे के उपयोग पर सतर्कता।

बड़े पैमाने पर अस्थायी उपचार सुविधाओं का निर्माण:अस्थायी कोविड

सार्वजनिक और निजी शैक्षणिक संस्थानों, विश्वविद्यालयों, इंजीनियरिंग कॉलेजों और बुनियादी न्यूनतम सुविधाओं वाले स्कूलों के छात्र छात्रावासों को परिवर्तित करने वाली उपचार सुविधाएं: बिस्तर, शौचालय और पानी का प्रबंधन और चिकित्सा सुविधाओं को सार्वजनिक और निजी अस्पतालों और कॉरपोरेट सीएसआर से जोड़ने के लिए न्यूनतम निवेश की आवश्यकता है।

स्थानीय प्रशासन को मजबूत बनाना: सेवानिवृत्त आई.ए.एस., आई.पी.एस. और सैन्य अधिकारियों के समर्थन से स्थानीय प्रशासन को मजबूत करना जो स्थानीय प्रशासन को संभाल सकते हैं और राहत कार्य को संभालने की अनुमति दे सकते हैं।

सामुदायिक स्तर

बड़े पैमाने स्वयंसेवी भागीदारी: प्रशासनिक, धार्मिक, सामाजिक, स्थानीय राय के नेताओं और गैर-सरकारी संगठनों को शामिल करते हुए घर और समुदाय में निम्नलिखित क्या करें और क्या न करें पर आधिकारिक सलाह घर-घर अभियान का एक कार्यक्रम, जिसमें आशा, एएनएम, एनसीसी और एनएसएस स्वयंसेवकों को गांव से लेकर शहरी क्षेत्र एनएसएस और एनवाईके स्तर के क्लब, एनसीसी कैडेटों और नागरिक सुरक्षा स्वयंसेवकों को जिला स्तर पर लूप में लाने की जरूरत है।

होम आइसोलेशन के तहत लोगों पर विशेष ध्यान देने में आर.डब्ल्यू.ए. को शामिल करने की आवश्यकता है: घरेलू अलगाव के तहत कोविड रोगियों को सभी आवश्यक सहायता प्रदान करने के लिए चौबीसों घंटे कॉल सेंटर, जो भय मनोविकृति को दूर करने और सुरक्षा की भावना पैदा करने में एक लंबा रास्ता तय करेगा। रोगी जो शीघ्र स्वस्थ होने के लिए आवश्यक शर्तों में से एक है। रेजिडेंट वेलफेयर एसोसिएशन और पंचायतों को ट्रैकिंग, मेडिकल और वैक्सीन और ऑक्सीजन सपोर्ट में शामिल किया जा सकता है।

एम.जी.एन.सी.आर.ई. ने समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए

1. भारतीय बागान प्रबंध संस्थान, बेंगलुरु, कर्नाटक
2. झूलेलाल प्रौद्योगिकी संस्थान, पुणे, महाराष्ट्र
3. येनेपॉय इंस्टीट्यूट ऑफ आर्ट्स, साइंस, कॉमर्स एंड मैनेजमेंट, मैंगलोर, कर्नाटक
4. पेट्रीशियन कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड साइंस, चेन्नई, तमिलनाडु
5. सेंट जोसेफ कॉलेज ऑफ कॉमर्स, बेंगलुरु, कर्नाटक

सुविधाओं और विशेषज्ञता को साझा करके ग्रामीण प्रबंधन में व्यावसायिक शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए आपसी संबंधों की खोज, विस्तार और मजबूत करने के लिए समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए।

संकाय विकास कार्यक्रम

संकाय और छात्र स्वयंसेवकों में मनोसामाजिक कौशल पैदा करते हुए कोविड - 19 महामारी के बीच सामाजिक उद्यमिता समय की आवश्यकता है। --- एम.जी.एन.सी.आर.ई. ने 8 से 14 मई तक **मनोनमनियम सुंदरनार विश्वविद्यालय**, तिरुनलवेली, तमिलनाडु के सहयोग से **"ग्रामीण उद्यमिता और सामाजिक उद्यमिता में केस चर्चा पद्धति के कार्यान्वयन"** पर एक ऑनलाइन राष्ट्रीय स्तर के संकाय विकास कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम में 280 संकाय सदस्यों ने भाग लिया।

एफ.डी.पी. उच्च शिक्षण संस्थानों के साथ सामुदायिक जुड़ाव के साथ एम.जी.एन.सी.आर.ई. के आदेश के अनुरूप आयोजित किया गया था।

कोविड- 19 स्वयंसेवी कौशल छात्रों में कौशल प्रदान करने और विकसित करने पर ध्यान केंद्रित करते हैं ताकि वे कोविड रोगियों, उनके परिवारों, समुदायों, अस्पतालों और मदद मांगने वाले की मदद कर सकें - जो सेवा या भावनात्मक बंधन और परामर्श के माध्यम से हो सकता है।

मुख्य वक्ता:

1. ग्रामीण क्षेत्र में एम.एस.एम.ई. के लिए इनक्यूबेशन की आवश्यकता, प्रो. बरदा प्रसाद, निदेशक, इनक्यूबेशन सेंटर, श्री श्री विश्वविद्यालय, कटक, भुवनेश्वर, ओडिशा

2. सामाजिक उद्यमिता - प्रो. कृष्णमूर्ति, आई.आर.एम.ए. द्वारा अरविंद आईकेयर अस्पतालों का एक केस

3. डॉ. चंद्रमोहन गुप्ता, शूलिनी विश्वविद्यालय, हिमाचल प्रदेश द्वारा ग्रामीण उद्यमिता

4. ग्रामीण क्षेत्र में वित्तीय प्रभाव - डॉ. नारायण के, आई.सी.एफ.ए.आई. द्वारा एक मॉडल 'रुडसेटी',

5. श्री सुंदरसन श्रीनिवासन द्वारा ग्रामीण क्षेत्र में ऊर्जा का अक्षय स्रोत,

6. डॉ. प्रमोद कुमार द्वारा वर्तमान परिदृश्य में ग्रामीण उद्यमिता का दायरा,

7. ग्रामीण उद्यमिता का भविष्य श्री. मीनेश शाह, कार्यकारी निदेशक, एन.डी.डी.बी.

अध्यक्ष एम.जी.एन.सी.आर.ई., कोविड -19 महामारी के बीच ग्रामीण उद्यमिता के महत्व, सेवा के संदर्भ में सामाजिक लेखा परीक्षा करने के रुझान और छात्र और संकाय स्वयंसेवकों में मनो-सामाजिक कौशल बढ़ाने की भूमिका पर सुवक्ता थे।

कोविड- 19 की वर्तमान स्थिति में सामाजिक उद्यमिता के महत्व पर चर्चा हुई, मौजूदा संसाधनों का उपयोग, स्टार्टअप के लिए हैंडहोल्डिंग, ऊर्जा के नवीकरणीय स्रोत का उपयोग करके लागत को कैसे कम किया जाए, और लीडर 'अमूल' का आत्म निर्भर होने का अध्ययन किया जाए।

केस स्टडीज पर चर्चा की गई: अरविंद आई केयर हॉस्पिटल, रुडसेटी - धर्मस्थल, कर्नाटक, अमूल - द टेस्ट ऑफ इंडिया

प्रमुख तथ्य:

- संकाय सदस्यों को अपने छात्रों के बीच 'ग्रामीण उद्यमिता' अनुभव साझा करने के लिए प्रेरित किया गया
- अवधारणाओं को समझने और साझा करने के लिए मामलों का उपयोग किया गया था
- संकाय सदस्य सामाजिक उद्यमिता में कैसे नेतृत्व कर सकते हैं
- व्यक्तिगत अनुभवों को केस या केसलेट में परिवर्तित किया जा सकता है
- एक साधारण चुनौती पर विचार करके एक परियोजना रिपोर्ट को पूरा किया जा सकता है

परिणाम:

54 परियोजना रिपोर्ट प्रतिभागियों द्वारा प्रस्तुत किए गए

टीचिंग की केस मेथॉड: *केस चर्चा पद्धति समस्या निवारण में प्रशिक्षण के लिए एक आवश्यक अनुभवी शिक्षण पद्धति है। केस चर्चा पद्धति एक निर्देशक विधि (सिद्धांत नहीं) है जो उन स्थितियों के आधार पर सौंपे किए गए परिदृश्यों को संदर्भित करती है जिसमें छात्र निरीक्षण, विश्लेषण, रिकॉर्ड, कार्यान्वित, निष्कर्ष, सारांश या अनुशंसा करते हैं। केस स्टडीज का निर्माण और चर्चा के लिए एक उपकरण के रूप में बनाया और उपयोग किया जाता है।*

डॉ. शिवप्रसाद ने एफ.डी.पी. में 280 प्रतिभागियों को प्रेरित किया

प्रो. कृष्णमूर्ति, आई.आर.एम.ए. सामाजिक उद्यमिता पर संबोधित करते हुए

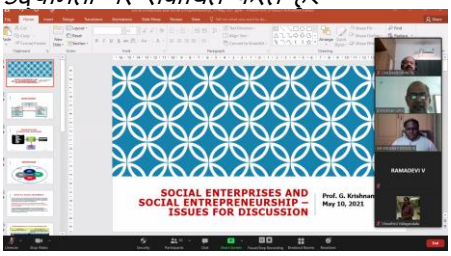

एफ.डी.पी. को संबोधित करते हुए प्रो. सुंदरसन श्रीनिवासन

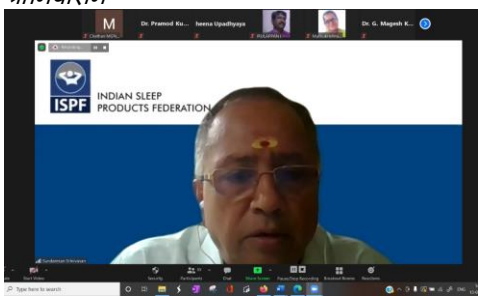

प्रो. अजीत कुमार सिंह कुलपति श्री श्री विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर, ओडिशा अपने इनपुट देते हुए

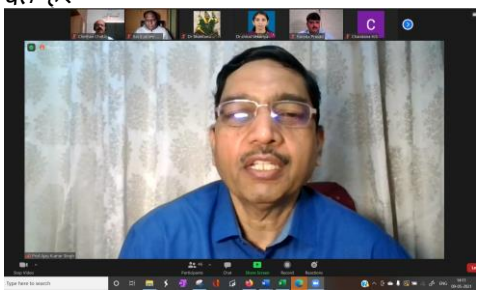

शूलिनी विश्वविद्यालय, सत्र में डॉ. चंद्रमोहन गुप्ता

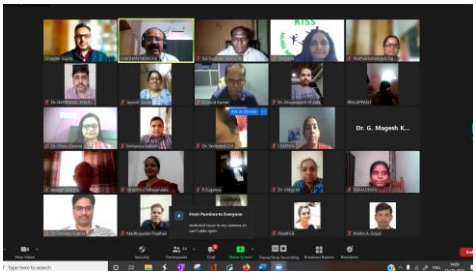

श्री. मीनेश शाह, कार्यकारी निदेशक, एन.डी.डी.बी. ग्रामीण उद्यमिता के भविष्य पर संबोधित करते हुए

डॉ. बरदा प्रसाद एम.एस.एम.ई. के लिए इनक्यूबेशन समझाते हुए

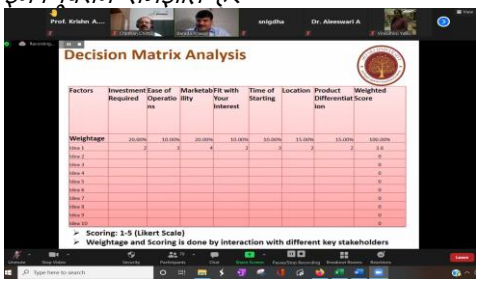

रुडसेटी को समझाते हुए डॉ. नारायण के, आई.सी.एफ.ए.आई.

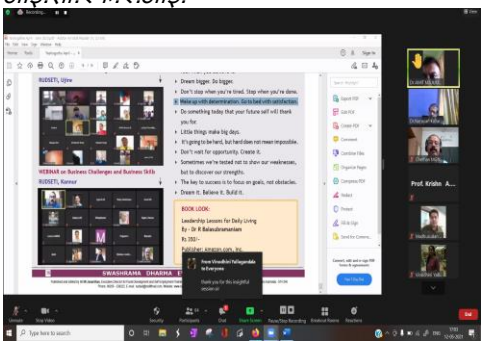

एम.जी.एन.सी.आर.ई. अध्यक्ष प्रतिभागियों को प्रेरित कर रहे हैं

वर्तमान महामारी की स्थिति से निपटने के लिए भावनात्मक कल्याण आवश्यक है - MGNCRE का ऑनलाइन राष्ट्रीय स्तर का संकाय विकास कार्यक्रम "भावनात्मक बुद्धिमत्ता और लचीलापन का निर्माण - अनुभवात्मक शिक्षण और सीखने की केस विधि" 8 से 14 मई तक मनोनमनियम सुंदरनार विश्वविद्यालय, तमिलनाडु के सहयोग से, भावनात्मक स्वास्थ्य के पहलुओं और संकाय और छात्र स्वयंसेवकों में मदद कौशल विकसित करने पर मँडरा गया। एफ.डी.पी. में 60 संकाय सदस्यों ने भाग लिया। एफ.डी.पी. सामुदायिक जुड़ाव के माध्यम से उच्च शिक्षण संस्थानों के साथ जुड़ने के हमारे जनादेश को ध्यान में रखते हुए है। छात्रों को कोविड रोगियों के लिए स्वयंसेवा सेवाओं में मदद करने की आवश्यकता के प्रति संवेदनशील बनाया जा रहा है क्योंकि यह भी समय की आवश्यकता है।

एफ.डी.पी. में शामिल विषय:

- सहायक कैसे बनें (भावनात्मक/मनोवैज्ञानिक)
- भावनात्मक भलाई का निर्माण
- स्वयंसेवी कौशल विकसित करना और प्रभावित लोगों को कोविड - 19 स्थिति से निपटने में मदद करना
- पेशेवर जानकारी हासिल करना और साझा करना
- पुनर्निर्माण परामर्श में कौशल हासिल करना
- • स्वयं की भावनाओं और उमंगे का अवलोकन करना

प्रमुख वक्ता:

डॉ. बी. शिवप्रसाद, प्रेरक वक्ता

डा. उर्वशी बैद, विपणन और संचार पेशेवर

सुश्री ललिता महेश्वरण

सुश्री बी. विजय ललिता श्रीनिवास, सलाहकार और व्यवसायी मनोवैज्ञानिक

डॉ. डब्ल्यू. जी. प्रसन्न कुमार, अध्यक्ष एम.जी.एन.सी.आर.ई.

उद्घाटन में संबोधित करते हुए अध्यक्ष एम.जी.एन.सी.आर.ई. ने कहा, "महामारी के मौजूदा परिदृश्य ने भावनात्मक कल्याण की आवश्यकता को सामने ला दिया है। एक व्यक्ति द्वारा अनुभव की जाने वाली भावनात्मक गुणवत्ता विभिन्न जनसांख्यिकीय, आर्थिक और स्थितिजन्य कारकों से प्रभावित होती है। आंकड़ों के अनुसार, कोविड - 19 के प्रकोप की शुरुआत नेभावनात्मक भलाई को 72% तक कम कर दिया है। तनाव, अवसाद और चिंता जैसे मानसिक स्वास्थ्य संबंधी चिंताओं से संबंधित भावनात्मक कल्याण में कमी के व्यापक प्रभाव हैं।

इसके फलस्वरूप, ये कारक "शारीरिक स्वास्थ्य संबंधी चिंताओं जैसे कि पाचन विकार, नींद की गड़बड़ी और ऊर्जा की सामान्य कमी में योगदान करते हैं।"

चर्चा किए गए प्रमुख विषय:

करियर की सफलता और इसके महत्व को बढ़ाना "संकाय सदस्यों को निरंतर शिक्षार्थी बनने के लिए" और भावनात्मक बुद्धिमत्ता पर मार्गदर्शन

मुख्य तथ्य:

- रिश्तों के सामाजिक नेटवर्क में अपने स्वयं के स्थान के जीवन के बारे में एक सकारात्मक एकीकृत दृष्टिकोण विकसित किया।
- आराम करना, अपने जीवन के संकटों में संतुलन हासिल करना, अपने आप को धीरे-धीरे अपने भीतर

रहने वाले लोगों के नियंत्रण का ध्यान केंद्रित करने के लिए जोर देना सीखना।
• तनाव को कैसे संभालें, प्रबंधित करें और कम करें।

परिणाम:
47 प्रतिभागियों ने अपने छात्रों के साथ एक कार्यशाला आयोजित की और अपनी कार्य अनुसंधान परियोजना रिपोर्ट एम.जी.एन.सी.आर.ई. को प्रस्तुत की।

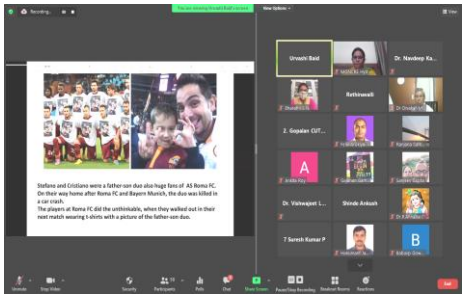

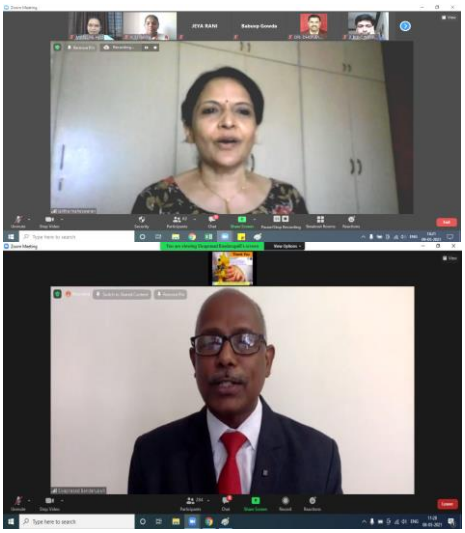

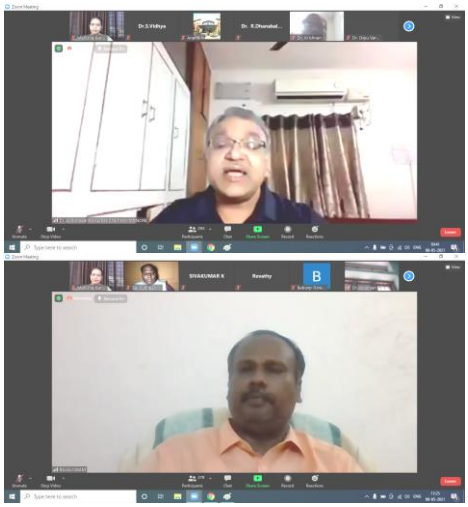

हर एक तक पहुंचें - 'भावनात्मक बुद्धिमत्ता और लचीलापन का निर्माण - अनुभवात्मक शिक्षण और सीखने की केस विधि' पर 17 - 21 मई के दौरान आयोजित एफ.डी.पी. में 31 संकाय सदस्यों ने भाग लिया। प्रमुख वक्ताओं में सुश्री बी. विजय ललिता श्रीनिवास, काउंसलर और प्रैक्टिशनर साइकोलॉजिस्ट, डॉ. डब्ल्यू. जी. प्रसन्न कुमार, अध्यक्ष एम.जी.एन.सी.आर.ई., प्रो. चेतन चित्तलकर और प्रो. मेल्विन नोरोन्हा, एम.जी.एन.सी.आर.ई. सलाहकार थे। केस स्टडी पद्धति का उपयोग करते हुए व्याख्यान, रोल प्ले, असाइनमेंट एफ.डी.पी. में उपयोग किए जाने वाले उपकरण और प्रक्रियाएं थे।

छात्रों को स्वयंसेवी कौशल प्रदान किया जा रहा है और उन्हें शारीरिक और भावनात्मक दोनों तरह से कोविड रोगियों और उनके परिवारों की मदद करने की आवश्यकता के प्रति संवेदनशील बनाया जा रहा है। यह भी ***सामुदायिक जुड़ाव*** के माध्यम से उच्च शिक्षण संस्थानों के साथ जुड़ने के एम.जी.एन.सी.आर.ई. के जनादेश के अनुरूप है।

अध्यक्ष एम.जी.एन.सी.आर.ई. ने निम्नलिखित प्रमुख तथ्यों पर चर्चा की -
• संकाय को छात्रों के जीवन को इस तरह से छूना चाहिए कि वे हर एक तक पहुँचने की सोच से प्रभावित कोविड -19 के जीवन को छू सकें।
• छात्रों को स्वयंभू बनना सीखना चाहिए और अच्छा बनो अच्छा करो को ध्यान में रखते हुए अपनी मदद का विस्तार करना चाहिए।
• किसी एक की जान बचाई गई या कोई एक आंसू पोंछा गया, वह कोविड के खिलाफ इस लड़ाई में बहुत मदद करेगा।
• एफ.डी.पी. निष्कर्ष और परियोजना रिपोर्ट प्रस्तुत करने पर गतिविधियां नहीं रुकनी चाहिए। लड़ाई तब तक जारी है जब तक अंतिम कोविड प्रभावित का ध्यान नहीं रखा जाता है।
• प्रत्येक संस्थान में कम से कम 5 कोविड प्रबंधन दल होने चाहिए और छात्र टीम के एक भाग के रूप में कोविड स्वयंसेवी गतिविधियों को दूर करते हैं। कोविड प्रोटोकॉल और सावधानियों का पालन करना महत्वपूर्ण है।
• छात्रों को हस्तक्षेप के साथ मार्गदर्शन करने और समस्याओं को सरल या हल करने के लिए संकाय।

अतिथि वक्ताओं/वक्ताओं के उल्लेखनीय उद्धरण थे -
'अच्छा बनो अच्छा करो'
'हर एक तक पहुंचें'
'आप जहाँ हैं वहीं से शुरू करें।
आपके पास जो है उसका उपयोग करें।
जो तुम कर सकतो हो वो करो।'
''जब तक दर्द न हो तब तक आपने हार नहीं मानी''

चर्चा किए गए प्रमुख तथ्य:
• मनोवैज्ञानिक तनाव की स्थिति
• कोविड- 19 के बारे में मिथक और गलत धारणाएं; बर्न आउट और भावनात्मक टूटन और स्वयं की देखभाल
• विभिन्न टीके; उपलब्धता; कौन ले सकते हैं - कौन नहीं ले सकते हैं
• स्वयंसेवी की भूमिका
• शिक्षण की केस पद्धति का परिचय
• बुनियादी जरूरतों को पूरा करना, सूचना साझा करना, भावनात्मक संकट को कम करना,
• चिंता से युक्त (केस चर्चा पद्धति का उपयोग करना)
• कम मनोदशा पर प्रतिक्रिया देना, क्रोध को नियंत्रित करना, अपराधबोध को शांत करना, दुख के साथ काम करना (केस चर्चा पद्धति का उपयोग करना)
• आत्महत्या के जोखिम को प्रबंधित करना, कलंक को कम करना, लचीलेपन के आख्यानों का पोषण करना (केस चर्चा पद्धति का उपयोग करना)

मुख्य तथ्य:
✓ संबंध निर्माण - ग्राहक को सहज बनाना।
उदाहरण: आपका नाम क्या है? आज आप कैसा महसूस कर रहे हैं? आज आप हमसे बात करने के लिए क्या लाए हैं?
✓ सक्रिय और सावधानी से सुनना - नोट्स बनाना और ग्राहक जो कुछ भी मांग रहा है उसे याद रखना।
उदाहरण: मैंने आपको बात करते हुए सुना है..... जब आप कहते हैं तो मैं आपको महसूस कर सकता हूं..., मैं आपकी भावनाओं को यहां साझा करता हूं.....
✓ ओपेन-एंडेड प्रश्नों का उपयोग करना - ऐसे प्रश्न जो ग्राहकों को यह व्यक्त करने में मदद करेंगे कि वे क्या महसूस कर रहे हैं।
उदाहरण - आपको क्या लगता है कि आप इस स्थिति में क्या कर सकते हैं? अब आप जो महसूस कर रहे हैं वह आपको क्यों महसूस होता है? क्या आपको लगता है कि हम इसके लिए कोई विकल्प सोच सकते हैं?
✓ मुद्दों से निपटना - संसाधनों को देखना और क्लाइंट की जरूरतों के लिए जानकारी प्राप्त करना।
उदाहरण - आपने भोजन वितरण का उल्लेख किया है, हमारे पास आपके क्षेत्र में कोविड प्रभावित परिवारों की राहत के लिए काम करने वाला एक स्थानीय एन.जी.ओ. है, क्या आप उनसे जुड़ना चाहेंगे? आपने दवा की आवश्यकता का उल्लेख किया है, वर्तमान में मुझे कोई स्रोत नहीं मिल रहा है, मैं इसे लिख रहा हूं, अगर मुझे कोई जानकारी मिलती है तो मैं आपसे संपर्क करूंगा। क्या कोई और तरीका है जिससे मैं आपकी मदद कर सकूं?
✓ सहानुभूति प्रदर्शित करना - ग्राहकों को यह महसूस कराने में सक्षम होना कि आप उनकी भावनाओं से संबंधित हो सकते हैं।
उदाहरण: ऐसा लगता है कि आप वह सब कुछ कर सकते हैं जो आप कर सकते थे... मैं महसूस कर सकता हूं कि यह आपके लिए कितना कठिन है..., मुझे विश्वास नहीं हो रहा है कि आप कितने मजबूत हैं, यह देखते हुए कि आप कितने तनाव में हैं ..
✓ विभिन्न टीके; उपलब्धता; कौन ले सकता है - कौन नहीं ले सकता
✓ मिथक और भ्रांतियाँ;
✓ निर्णय न करें/व्याख्या न करें/प्रतिक्रिया न करे
✓ स्वयंसेवी की भूमिका
✓ शिक्षण की केस पद्धति

परिणाम:
31 में से 20 प्रतिभागियों ने अपने छात्रों के लिए कोविड स्वयंसेवी कौशल पर एक कार्यशाला आयोजित की और उन्हें संस्थानों में गठित विभिन्न कोविड टीमों में गतिविधियों को अंजाम दिया।

प्रतिभागियों में से प्रत्येक ने एफ.डी.पी. के 5 वें दिन छात्र गतिविधियों और संकाय हस्तक्षेपों को प्रस्तुत किया।

केस स्टडी पद्धति का उपयोग करके अवधारणाओं को कौशल में परिवर्तित किया गया

और कोविड स्वयंसेवी कार्यों को वितरित करते समय लागू किया गया।

विविध बैक ग्राउंड के संकाय ने कोविड वॉलंटियरिंग की अवधारणाओं को समझने और छात्रों को गतिविधियों के लिए प्रेरित करने में असाधारण कौशल दिखाया।

कुछ प्रतिभागियों ने साझा किया कि गतिविधि ने छात्रों को उनके व्यक्तिगत अलगाव से बाहर आने में सक्षम बनाया, जिसका वे परिसर और ऑनलाइन कक्षाओं से दूर रहने का सामना कर रहे हैं।

इन गतिविधियों में छात्रों द्वारा प्राप्त कौशल व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन में उपयोगी होंगे।

- ***संकट में उन लोगों को सुनो।***
- ***संकट में उन लोगों के लिए एक सेवा प्रदान करें।***
- ***घर पर या संगरोध में रिश्तेदारों के साथ कोविड मौत की स्थिति से निपटना।***
- ***जानकारी के साथ रोगी और परिवार को प्रबंधित करने में अस्पताल की मदद करना।***
- ***सेवा प्रदाताओं जैसे भोजन, चाय, नाश्ता, आपूर्ति (साबुन, सैनिटाइज़र) आदि के साथ बातचीत करें और उन्हें ज़रूरतमंदों तक पहुँचाएँ।***
- ***प्लाज़्मा, दवा, ऑक्सीजन, वेंटिलेटर जैसी आवश्यक चीज़ों के बारे में नवीनतम जानकारी। श्मशान/अंत्येष्टि कतार की जानकारी (स्वयंसेवकों के संपर्क में रहें)***
- ***वृद्ध लोग, उनके परिवार और उनकी देखभाल करने वालों के लिए सहायता महामारी के लिए देशों कीव्यापक प्रतिक्रिया का एक अनिवार्य हिस्सा है। अलगाव और संगरोध के समय में, वृद्ध लोगों को अपने शारीरिक स्वास्थ्य और सामाजिक देखभाल के लिए पौष्टिक भोजन, बुनियादी आपूर्ति, धन, दवा तक सुरक्षित पहुंच की आवश्यकता होती है।***
- ***यह सुनिश्चित करने के लिए सटीक जानकारी का प्रसार महत्वपूर्ण है कि महामारी के दौरान शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ कैसे रहें और बीमार पड़ने पर क्या करें, इस बारे में सभी के पास संसाधनों पर स्पष्ट संदेश और जानकारी है।***

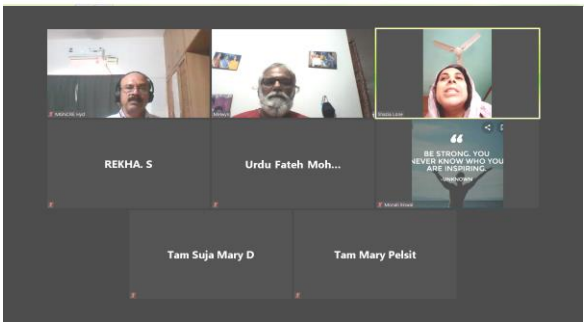

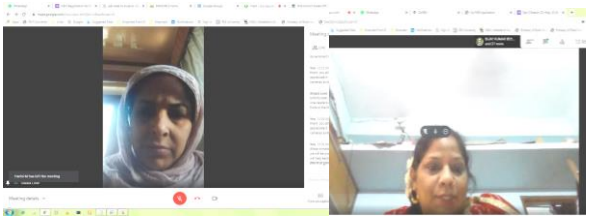

मनोवैज्ञानिक कौशल, वर्तमान समय की आवश्यकता- 17-21 मई के दौरान ***बालासोर इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्निकल स्टडीज,*** बालासोर, ओडिशा के सहयोग से कोविड - **19** संक्रमित और प्रभावितों को मनोवैज्ञानिक सहायता प्रदान करने के लिए स्वयंसेवकों के कौशल पर एम.जी.एन.सी.आर.ई. के ऑनलाइन राष्ट्रीय स्तर के संकाय विकास कार्यक्रम में 60 संकाय सदस्यों ने भाग लिया।

मनोवैज्ञानिक कौशल समाज के भावनात्मक स्वास्थ्य की कुंजी हैं। संकट से पहले और बाद में कोविड रोगियों को इसकी और अधिक आवश्यकता है। आत्मविश्वास पैदा करने और भावनात्मक कल्याण प्रदान करने के लिए ऐसे प्रशिक्षित कौशल की आवश्यकता के अनुरूप, उच्च शिक्षा संस्थानों के साथ ***सामुदायिक जुड़ाव*** के एम.जी.एन.सी.आर.ई. के जनादेश को ध्यान में रखते हुए एफ.डी.पी. का संचालन किया जा रहा है। छात्रों को स्वयंसेवी कौशल प्रदान किया जा रहा है और उन्हें शारीरिक और भावनात्मक दोनों तरह से कोविड रोगियों और उनके परिवारों की मदद करने की आवश्यकता के प्रति संवेदनशील बनाया जा रहा है।

चर्चा किए गए विषय:

केस स्टडी पद्धति का उपयोग करते हुए व्याख्यान और रोल प्ले, मनोवैज्ञानिक तनाव की स्थिति के बारे में परिचय -

सुश्री बी. विजय ललिता श्रीनिवास द्वारा - परामर्शदाता और मनोवैज्ञानिक / प्रशिक्षक

मास्टर ट्रेनर के लिए दिशानिर्देश, प्रतिभागियों को केसलेट का वितरण

आइस ब्रेकिंग / संदर्भ स्थापित करना, की गई गतिविधियों के बारे में प्रतिक्रिया एकत्र करना

'परियोजना रिपोर्ट' लिखने पर ब्रीफिंग

अपने व्यक्तिगत अनुभवों को 'अनुभवात्मक शिक्षा' के रूप में प्रस्तुत करना और परियोजना रिपोर्ट प्रस्तुत करना

अध्यक्ष एम.जी.एन.सी.आर.ई. ने प्रबोधन बात की - संकाय सदस्यों को अपने प्रशिक्षण के लिए कैसे प्रेरित किया जाए छात्रों को कोविड - **19** स्वयंसेवकों के रूप में, बैठकें आयोजित करना, सूचनाओं का संग्रह और जरूरतमंद लोगों तक विस्तार करना और व्यक्तिगत अनुभवों को एक परियोजना रिपोर्ट में परिवर्तित करना।

वक्ताओं द्वारा उल्लेखनीय उद्धरण:

मानसिक रूप से मजबूत और सुदृढ़ करने की आवश्यकता है

दूसरों को प्रशिक्षण देने से पहले खुद को बेहतर बनाएं, स्थिति और आवश्यकता को समझें और उन्हें ठीक से सुनें

सहानुभूति नहीं हमदर्दी रखो

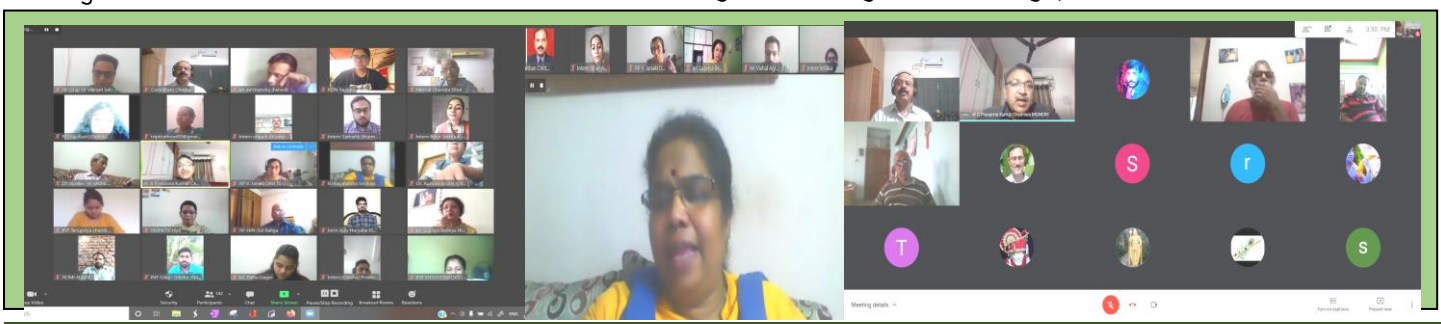

अच्छा बनो अच्छा करो
वास्तविक जानकारी एकत्र करें और इसे जरूरतमंद लोगों तक पहुंचाएं

मुख्य तथ्यों पर चर्चा की गई:
साइको सोशल स्किल्स, वर्तमान समय की आवश्यकता

एक नेक काम के लिए स्वयंसेवा

केस स्टडीज पर चर्चा: कोविड - 19 से पहले और बाद की स्थितियों से संबंधित सब कुछ

मुख्य तथ्य: कुछ प्रतिभागियों को प्रेरित किया गया और विभिन्न तरीकों से सेवाओं का विस्तार करना शुरू किया

परिणाम:
अपनों को हर तरह से मदद मिलने लगी और प्रतिभागियों द्वारा 15 परियोजना रिपोर्ट प्रस्तुत की गईं

"यह हमारी नैतिक और सामाजिक जिम्मेदारी है कि हम बीमारी के प्रभावों के बारे में जागरूकता लाएं और इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि हमारे नेटवर्क के माध्यम से प्रभावितों का समर्थन करने के लिए स्वयंसेवकों की भूमिका निभाएं" - अध्यक्ष एम.जी.एन.सी.आर.ई. अध्यक्ष ने पूरे देश में एन.एस.एस. अधिकारियों और समन्वयकों के साथ 10-14 मई के दौरान आयोजित "भावनात्मक बुद्धिमत्ता और लचीलापन (अनुभवात्मक शिक्षण और सीखने की केस विधि)" पर राष्ट्रीय स्तर के संकाय विकास कार्यक्रम में प्रोत्साहित किया। 192 सदस्यों ने एफ.डी.पी. में भाग लिया। सुश्री बी. विजय ललिता श्रीनिवास, परामर्शदाता और मनोवैज्ञानिक/ प्रशिक्षक एफ.डी.पी. में विशेषज्ञ प्रशिक्षक थीं।

एफ.डी.पी. छात्रों में कौशल प्रदान करने और विकसित करने पर ध्यान केंद्रित करता है ताकि वे कोविड रोगियों, उनके परिवारों, समुदायों, अस्पतालों और मदद मांगने वाले की मदद कर सकें। ये कौशल वर्तमान महामारी की स्थिति के लिए आवश्यक और उपयुक्त हैं। यह उच्च शिक्षण संस्थानों के साथ ***सामुदायिक जुड़ाव*** की दिशा में एम.जी.एन.सी.आर.ई. की प्रतिबद्धता भी है। छात्र स्वयंसेवकों को एकल व्यक्तियों (परिवार में अकेला छोड़ दिया गया) और उदास व्यक्तियों को परामर्श प्रदान करने के लिए प्रशिक्षित किया जाएगा। छात्र जरूरतमंद व्यक्ति और सहायता प्रदाता के बीच सेतु का काम करेंगे। वे विभिन्न प्रामाणिक स्रोतों के माध्यम से जानकारी एकत्र करेंगे, जानकारी संकलित करेंगे और फिर इसे अलग-अलग उप समूहों में प्रसारित करेंगे।

अध्यक्ष एम.जी.एन.सी.आर.ई. ने कहा - *"अब, कोरोना वायरस महामारी और उसके बाद के संदर्भ में, यह हमारी नैतिक और सामाजिक जिम्मेदारी है कि हम बीमारी के प्रभावों के बारे में जागरूकता लाएं और इससे भी महत्वपूर्ण बात है कि हमारे नेटवर्क के माध्यम से प्रभावितों का समर्थन करने के लिए स्वयंसेवकों की भूमिका निभाएं। राष्ट्रीय सेवा योजना निदेशालय (एन.एस.एस.) ने इस नेक काम में शामिल होने और योगदान करने के लिए राज्य एन.एस.एस. / एन.सी.सी. अधिकारियों, संकाय और छात्रों के उपयोग के बारे में भी सूचित किया है। किसी भी गतिविधि को स्थायी रूप से संचालित करने के लिए हमें निरंतर समर्थन के लिए एक संस्थागत तंत्र की आवश्यकता होती है। एम.जी.एन.सी.आर.ई. संसाधन व्यक्ति द्वारा व्यावहारिक प्रशिक्षण और मार्गदर्शन देने के बाद छात्र कोविड स्वयंसेवी समूह बनाना और उन्हें उपयुक्त स्वयंसेवी कौशल प्रदान करना आंतरिक संस्थागत तंत्र के रूप में सामने आएगा जिसे देश के प्रत्येक उच्च शिक्षण संस्थान में गठित किया जा सकता है।"* सकारात्मक विचारक को कोई जहर नहीं मार सकता और न ही कोई दवा नकारात्मक विचारक को बचा सकती है।

चर्चा के मुख्य तथ्य:
सहानुभूति कौशल, सकारात्मक भावनात्मक स्वास्थ्य
भावनात्मक बुद्धिमत्ता का निर्माण
आत्मनिर्भर निर्णय लेना

"एक परामर्शदाता के रूप में हमारा प्रत्येक कार्य क्लाइंट को प्रभावित करेगा। इसलिए समय पर उपयुक्त कौशल का उपयोग करके क्लाइंट को सही तरीके से समझना महत्वपूर्ण है।"

47 प्रतिभागियों ने संकाय विकास कार्यक्रम के हिस्से के रूप में कोविड और स्वयंसेवी कौशल के दिशानिर्देशों पर अपने छात्रों के साथ वेबिनार आयोजित किया और संदर्भ अभ्यास के वैकल्पिक फ्रेम का अभ्यास किया।

केस स्टडीज पर चर्चा:
मैं 16 साल की लड़की हूं। मैं 11वीं कक्षा की पढ़ाई कर रही हूं। मैं कोविड पॉजिटिव नहीं हूं। मेरे पिता कोविड पॉजिटिव हैं और वह हमें बहुत परेशान कर रहे हैं। मुझे उसे अपने घर से बाहर फेंकने का मन कर रहा है

मैडम मेरी उम्र 41 साल है। मैं कोविड पॉजिटिव हूं। मेरे पति कोविड नेगेटिव हैं। मुझे डर लग रहा है। मैं मर सकती हूं।

मैं रमा, 38 साल की हूं, शादीशुदा हूं, मेरे दो बच्चे हैं। मुझे और मेरे पति को कोविड पॉजिटिव है। हाल ही में मेरे पति की नौकरी चली गई। हमें आर्थिक समस्या हो रही है। हम नहीं जानते कि स्थिति को कैसे संभालना है। (सहानुभूति और वस्तुतः कौशल लागू करें)।

मैं अनीता, 36 साल की हूं। मैं अकेली माँ हूं जिसकी 6 और 8 साल की 2 बेटियां हैं, मैं कोविड पॉजिटिव हूं, मुझे इस बात की चिंता है कि अगर मैं क्वारंटाइन में जाती हूं तो मेरे बच्चे मेरे बिना कैसे मैनेज करेंगे।

परिणाम:
192 प्रतिभागियों ने अपने संस्थान में बीट कोविड - साइकोसोशल सपोर्टिव स्किल्स ***(हर एक तक पहुंचें)*** कार्यशाला का आयोजन किया, प्रत्येक संस्थान में 5 टीमों का गठन किया और कार्य अनुसंधान रिपोर्ट प्रस्तुत की।

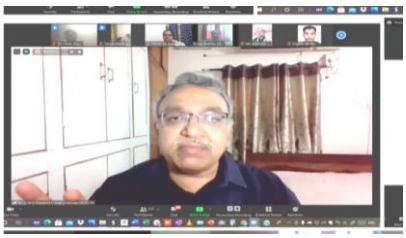

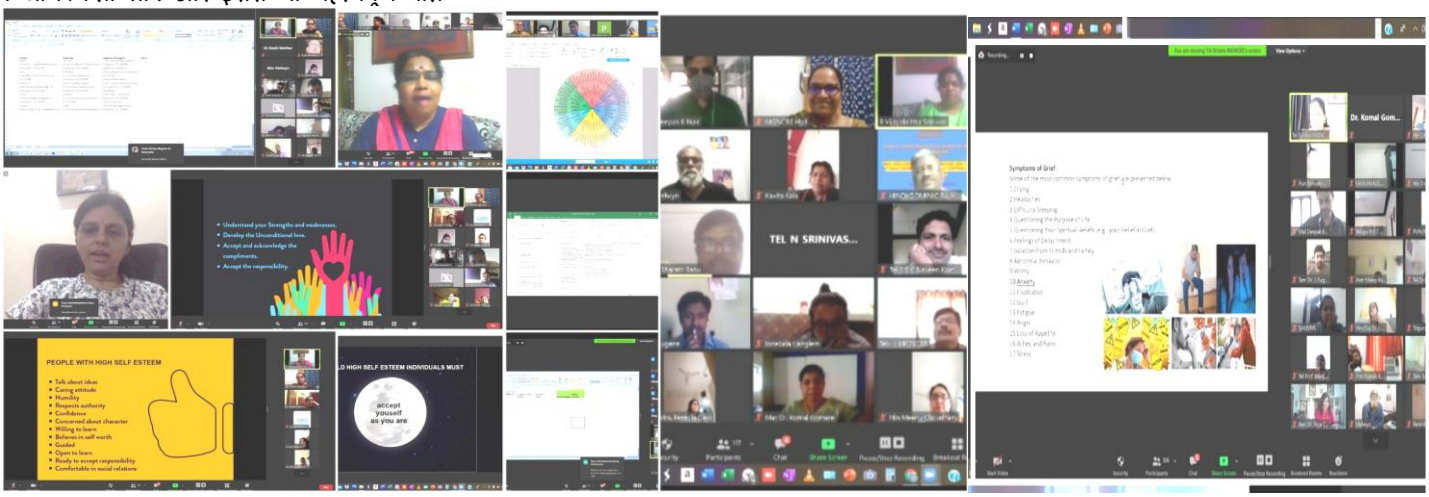

स्वच्छता कार्य योजना के हिस्से के रूप में, एम.जी.एन.सी.आर.ई. ने कार्यशालाओं का आयोजन किया जिसमें स्वच्छता गतिविधियाँ और मनोवैज्ञानिक सहायता गतिविधियाँ भी शामिल थीं।

उच्चतर शिक्षण संस्थानों के साथ ***सामुदायिक जुड़ाव*** एम.जी.एन.सी.आर.ई. के अधिदेश का हिस्सा है। वर्तमान महामारी की स्थिति को ध्यान में रखते हुए और छात्रों को शारीरिक और भावनात्मक सहायता प्रदान करने के लिए मनोवैज्ञानिक कौशल और प्रशिक्षण की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए, हम स्वच्छता के पहलुओं के साथ कार्यशालाओं का आयोजन कर रहे हैं। छात्र स्वयंसेवकों को स्वच्छता, सफाई और स्वास्थ्य प्रथाओं के बारे में जागरूक किया जाता है और उन्हें कोविड प्रभावित रोगियों और उनके परिवारों और दोस्तों को परामर्श प्रदान करने के लिए भी प्रशिक्षित किया जाता है। यह छात्रों के साथ जुड़ने के दोहरे लक्ष्य के रूप में काम करता है और उन्हें वर्तमान समय की आवश्यकता के अनुसार एक सामाजिक और नेक काम के लिए भी काम करता है।

एम.जी.एन.सी.आर.ई. का प्रभाव!

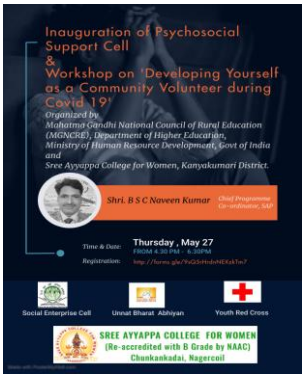

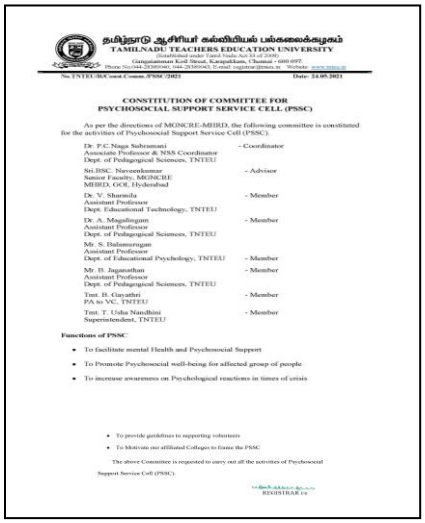

TAMILNADU TEACHERS EDUCATION UNIVERSITY

Gangaiamman Koil Street, Karapakkam, Chennai - 600 097.

No.TNTEU/R/Const.Comm./PSSC/2021 Date: 24.05.2021

CONSTITUTION OF COMMITTEE FOR PSYCHOSOCIAL SUPPORT SERVICE CELL (PSSC)

As per the directions of MGNCRE-MHRD, the following committee is constituted for the activities of Psychosocial Support Service Cell (PSSC).

Dr. P.C.Naga Subramani, Associate Professor & NSS Coordinator, Dept. of Pedagogical Sciences, TNTEU	- Coordinator
Sri.BSC. Naveenkumar, Senior Faculty, MGNCRE, MHRD, GOI, Hyderabad	- Advisor
Dr. V. Sharmila, Assistant Professor, Dept. Educational Technology, TNTEU	- Member
Dr. A. Magalingam, Assistant Professor, Dept. of Pedagogical Sciences, TNTEU	- Member
Mr. S. Balamurugan, Assistant Professor, Dept. of Educational Psychology, TNTEU	- Member
Mr. B. Jaganathan, Assistant Professor, Dept. of Pedagogical Sciences, TNTEU	- Member
Tmt. B. Gayathri, PA to VC, TNTEU	- Member
Tmt. T. Usha Nandhini, Superintendent, TNTEU	- Member

Functions of PSSC

- To facilitate mental Health and Psychosocial Support
- To Promote Psychosocial well-being for affected group of people
- To increase awareness on Psychological reactions in times of crisis
- To provide guidelines to supporting volunteers
- To Motivate our affiliated Colleges to frame the PSSC

The above Committee is requested to carry out all the activities of Psychosocial Support Service Cell (PSSC).

REGISTRAR i/c

तमिलनाडु शिक्षक शिक्षा विश्वविद्यालय टी.एन.टी.ई.यू. ने मई 2021 में मनोवैज्ञानिक सहायता सेवा प्रकोष्ठ (पी.एस.एस.) का गठन किया है। टी.एन.टी.ई.यू. के कुलपति प्रो. पंचनाथम ने 21 और 26 मई को एम.जी.एन.सी.आर.ई. द्वारा आयोजित मनोवैज्ञानिक सहायता स्वयंसेवी कौशल के मार्गदर्शन पर आयोजित कार्यशालाओं के माध्यम से तमिलनाडु के उच्च शिक्षण संस्थानों के शिक्षा विभागों में पी.एस.एस. प्रकोष्ठों के गठन का संदेश भेजा है।

कार्यशालाओं के अंश -

"ऐसी कार्यशालाओं का होना हमेशा एक महान सौभाग्य की बात है जो हमें स्वच्छता, ऊर्जा संरक्षण, पर्यावरण संरक्षण आदि बनाए रखने की प्रेरणा देती है, जिसे हम ग्रामीण विकास और उद्यमिता से जोड़ सकते हैं।"प्रो. जोसेफ नेलनट प्रो-कुलपति, असम डॉन बॉस्को विश्वविद्यालय ने स्वच्छता कार्य योजना (एस.ए.पी.) पर ऑनलाइन कार्यशाला के दौरान अवलोकन किया। सामाजिक कार्य विभाग के प्रोफेसर श्री विक्टर नारजारी ने कार्यशाला के अंतिम भाग में छात्रों को प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित किया और यह भी कहा कि वे शीघ्र ही स्वच्छता पर विशेष पाठ्यक्रम शुरू करेंगे।

'हमारी संस्था बहुमूल्य संसाधनों के संरक्षण के लिए जल शक्ति और पुनर्चक्रण अपशिष्ट के महत्व को पहचानती है; डाइट में टपका हुआ नल नियमित रूप से लगाया जाता है, 80% बल्ब एल.ई.डी. बल्ब हैं और परिसर में वर्षा जल संचयन किया जाता है।' डॉ. जी. शिवसुब्रमण्यम, प्रधान अध्यापक, डाइट मन्नारगुडी, तिरुवरूर जिला, तमिलनाडु ने कार्यशाला के दौरान स्वच्छ भारत मिशन के तहत एक स्वच्छ परिसर और एक स्वच्छ घर की आवश्यकता की पुष्टि की और बताया कि कैसे सभी को इसकी जिम्मेदारी लेनी चाहिए। डॉ. शिवसुब्रमण्यम, प्रोफेसर सेल्वी कुमारस्वामी, उप प्रधान अध्यापक, डॉ. मीनाक्षी, लेक्चरर के साथ-साथ डाइट के संकाय सदस्यों और छात्रों ने कार्यशाला में भाग लिया।

पानी की कमी वाले क्षेत्र से होने के बावजूद, हमारे कॉलेज ने परिसर के भीतर सफलतापूर्वक हरियाली का रोपण और रखरखाव किया। सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट की पहल पहले से ही चालू है और कॉलेज ने प्लास्टिक मुक्त नीति अपनाकर प्रदूषण मुक्त पर्यावरण की दिशा में भी काम किया है। ऊर्जा संरक्षण समिति का गठन करना और जल संरक्षण नीति तैयार करना प्रभावी संसाधन प्रबंधन की दिशा में पहला कदम होगा जिससे स्वच्छता कार्य योजना (एस.ए.पी.) की आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके।' प्रतिभागियों ने यह भी देखा कि सहयोगी तरीके से स्वच्छता पहल के अधिनियमन के लिए स्थानीय अधिकारियों के पास भी अभ्यास किया जा सकता है। डॉ. चंद्रकांतजी व्यास प्रधान अध्यापक संकाय सदस्यों और पूज्य लडाकचंद मानेकच और वोरा कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड कॉमर्स के साथ सईला गुजरात में कार्यशाला में भाग लिया। इस बात पर प्रकाश डाला गया कि कॉलेज वर्ष 2022 के लिए स्वच्छता कैम्पस रैंकिंग में प्रतिस्पर्धा की दिशा में एक कदम आगे बढ़ेगा।

लॉकडाउन के दौरान हमने अपने गोद लिए गए चार गांवों के जरूरतमंद लोगों को आवश्यक वस्तुओं को वितरित किया और हमने एन.एस.एस. कार्यक्रम के तहत हमारी एस.ए.पी. गतिविधियों के हिस्से के रूप में स्वच्छता, सफाई और स्वास्थ्य के संबंध में उन गांवों में विभिन्न जागरूकता कार्यक्रम भी किए। 3 मई को आयोजित स्वच्छता कार्य योजना (एसएपी) पर ऑनलाइन कार्यशाला में असम के डॉ. मोहम्मद इमाम उद्दीन अंसारी एन.एस.एस. अधिकारी पाथरकंडी कॉलेज के अधिकारी ने शामिल रहे। इस बात पर प्रकाश डाला गया कि छात्रों को प्रकाशन के लिए अपने कॉलेज में स्वच्छता गतिविधियों पर केस स्टडी लिखने के लिए प्रोत्साहित किया गया।

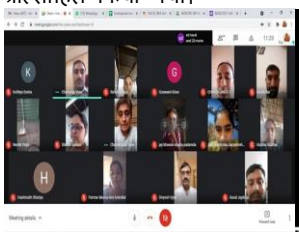

प्रगति में स्वच्छता कार्यशाला

मानसिक स्वास्थ्य के अंतर्गत हमारे व्यक्तिगत, सामाजिक, पेशेवर और भावनात्मक जीवन के विभिन्न क्षेत्र शामिल है। महात्मा गांधी

महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण शिक्षा परिषद
(पूर्व में राष्ट्रीय ग्रामीण संस्थान परिषद)
उच्चतर शिक्षा विभाग, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

5-1-174, शक्कर भवन, फतेह मैदान रोड, बशीरबाग, हैदराबाद, तेलंगाना – 500004
दूरभाष: 040-23212120, 23422105, फैक्स: 040-23212114, ई-मेल: admin@mgncre.in , वेबसाइट: www.mgncre.org

संपादकीय टीम: डॉ. डब्ल्यू.जी.प्रसन्न कुमार, अध्यक्ष, एम.जी.एन.सी.आर.ई., डॉ.डी.एन.दास, सहायक निदेशक, अनसूया.वी, संपादक
डॉ. टी. नागलक्ष्मी, सदस्य-सचिव, एम.जी.एन.सी.आर.ई. द्वारा प्रकाशित